सवाई जयसिंह की सांस्कृतिक उपलब्धियां

By anonimus - British Museum, Public Domain, https://commons.wikimedia.org/w/index.php?curid=23001406

Sawai Jai Singh II

Dr. Manish Shrimali

Assistan Professor

MLSU, Udaipur (manishmlsu2018@gmail.com)

परिचय

जय सिंह का जन्म 3 सितंबर 1686 को हुआ था। यह आमेर के शासक बिशन सिंह का बड़ा पुत्र था। इसका प्रारंभिक नाम विजय सिंह था किंतु बाद में यह सवाई जय सिंह के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इन्हीं सवाई जयसिंह की उपाधि सवाई का प्रयोग बाद के जयपुर के सभी शासकों ने किया। सवाई जयसिंह राजस्थान के अग्रणी शासकों में गिने जाते हैं जिन्होंने राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, स्थापत्य एवं कला के सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियां अर्जित की थी। सवाई जयसिंह की तुलना महाराणा कुंभा, चैहान शासक विग्रहराज चतुर्थ से की जा सकती है। सवाई जयसिंह ने लगभग 42 वर्ष तक आमेर पर शासन किया था। इस लंबी अवधि के दौरान उसने लगभग सात मुगल शासकों की सेवा भी की थी। औरंगजेब की मृत्यु के बाद जब मुगल साम्राज्य अपने पतन की ओर था तथा मराठा उत्तर की ओर बढ़ रहे थे तब सवाई जय सिंह ही थे जिन्होंने मुगल दरबार की महत्वपूर्ण सेवा की। अपने बढ़ते प्रभाव एवं अनुकूल समय का प्रयोग सांस्कृतिक उन्नति के लिए भी किया जो न केवल राजस्थान अपितु यह भारतवर्ष के लिए जयसिंह की अद्भुत देन है।

गणित एवं ज्योतिष के क्षेत्र में कार्य-

सवाई जयसिंह एक महान वीर शासक तो था ही तथा इसके साथ वह एक विद्वान भी था। सवाई जयसिंह ने अपने यहां पर कई विद्वानों एवं कलाकारों को आश्रय दिया था। सवाई जयसिंह के गणित एवं ज्योतिष के क्षेत्र में किए गए कार्य उल्लेखनीय है। यद्यपि वह संस्कृत एवं फारसी का विद्वान था किंतु उसकी उपलब्धियां गणित एवं ज्योतिष के क्षेत्र में असाधारण थी। जय सिंह खुले दिमाग का व्यक्ति था जो केवल गणित एवं ज्योतिष के क्षेत्र में परंपरागत ज्ञान पर ही निर्भर नहीं रहा अपितु उसने विदेशों से भी विद्वानों को बुलाया। उसका मानना था की परंपरागत ज्ञान एवं आधुनिक ज्ञान के माध्यम से एक सही एवं सटीक गणना आधारित ज्योतिष का विकास हो सके। 1785 ईसवी में उसने नक्षत्रों की शुद्ध सारणी बनवाई और उसका नाम तत्कालीन सम्राट के नाम से जीच-मोहम्मद-शाही रखा। जयसिंह ने स्वयं जयसिंह कारिका नामक ज्योतिष ग्रंथ की रचना की। सवाई जयसिंह को ज्योतिष के क्षेत्र में लाने एवं कार्य करने के लिए प्रेरित करने वालों में महाराष्ट्रीयन ब्राह्मण विद्वान पंडित जगन्नाथ का महत्वपूर्ण योगदान था। पंडित जगन्नाथ ने

Dr Manish Shrimali

यूक्लिड की रेखा गणित का संस्कृत में अनुवाद कराया तथा सिद्धांत कौस्तुभ एवं सम्राट सिद्धांत नामक ग्रंथों की रचना की। गुजराती ज्योतिष केवलराम ने लोगोरीथम का फ्रेंच से संस्कृत में अनुवाद किया जिसको विभाग सारणी कहा जाता है। इसी विषय के अन्य ग्रंथों की रचना भी सवाई जयसिंह के समय हुई जिनमें मिथ्या जीव छाया सारणी, दुक पक्ष सारणी, दुक पक्ष ग्रंथ, तारा सारणी, जय विनोद सारणी आदि मुख्य ग्रंथ है। इसके अतिरिक्त नयन मुखोपाध्याय द्वारा अरबी ग्रंथ ऊकर का संस्कृत में अनुवाद जयसिंह के काल में ही हुआ। पंडित रत्नाकर ने जयसिंह कल्पद्रुम नामक पुस्तक की रचना की थी जिसमें समाज और राजनीति का अच्छा चित्रण है।

सौर वेधशाला-

सवाई जयसिंह के द्वारा किए गए कार्यों में सबसे महत्वपूर्ण ज्योतिष एवं खगोल विज्ञान के क्षेत्र में किया गया कार्य उल्लेखनीय है। सवाई जयसिंह से पूर्व यूरोप में खगोल विज्ञान के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण कार्य हुए थे इसमें कॉपरनिकस ने अपनी पुस्तक "ऑन द रिवॉल्यूशन ऑफ द सेलीस्टियल स्फीयरस" में टॉलमी की उस सदियों पुरानी धारणा को झूठा साबित कर दिया जिसमें बताया गया था कि पृथ्वी इस ब्रह्मांड के बीच में है तथा सभी ग्रह एवं नक्षत्र उसके चारों ओर घूमते हैं। जय सिंह को जब यूरोपीय ज्ञान विज्ञान के बारे में पता चला तो उसने अपने परंपरागत एवं बाहरी ज्ञान के माध्यम से सटीक खगोलीय गणना करने वाले यंत्रों के निर्माण का प्रयास किया। सवाई जयसिंह ने इसके लिए पुर्तगाल के राजा के पास कुछ दूत भेजे जिनके माध्यम से उसने वहां की पांडुलिपियों एवं विद्वानों को अपने दरबार में आमंत्रित किया। ज्योतिष के क्षेत्र में उसके द्वारा बनाई गई सौर वेधशाला बड़ी महत्वपूर्ण है। पांच सौर वेध शालाओं का निर्माण उसके द्वारा किया गया। यह वेध शाला दिल्ली, उज्जैन, बनारस, मथुरा एवं जयपुर में बनाई गई। सौर वेध शालाओं में बड़े-बड़े यंत्रों को लगवाया गया इनके माध्यम से ग्रह, नक्षत्र की गति एवं सटीक स्थिति जानने का प्रयास किया गया। जयसिंह ने यूनानी ग्रंथों के अनुवाद से त्रिकोणमिति तथा लघु गणको के व्यवहार पर अध्ययन किया और अपने द्वारा निर्मित यंत्रों से लघुत्तम गणना के सिद्धांतों को इस तरह स्थापित किया कि इस नवनिर्मित वेधशाला में ग्रह नक्षत्र की गति की जानकारी शुद्ध रूप से प्राप्त की जा सके प्राप्त की जा सके। जयपुर स्थित सौर वेधशाला में कुल 16 यंत्र है जिनमें से कुछ प्रमुख यंत्रों की जानकारी निम्न लिखित है-

Dr. Manish Shrimali

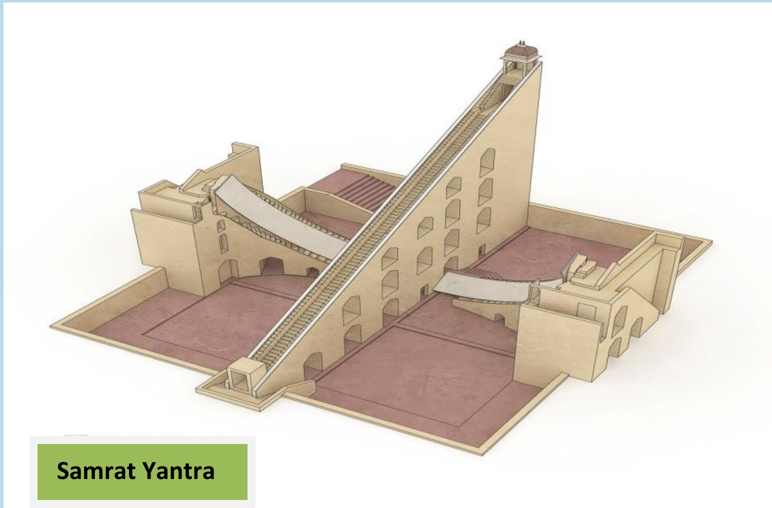

Samrat Yantra

1. **सम्राट यंत्र-** यह एक सूर्य घड़ी है यद्यपि यह पूर्व निर्मित घड़ी के समान ही है किंतु इसकी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसकी समय शुद्धता सबसे अधिक है। यह 2 सेकंड तक के समय को मापने में सक्षम है। माना जाता है कि इसका नामकरण पंडित जगन्नाथ के नाम पर किया गया था।

2. **छोटा सम्राट यंत्र-** यह भी एक सूर्य घड़ी है तथा यह लाल बलुआ पत्थर एवं सफेद संगमरमर से निर्मित है। इसकी विशेषता यह है कि यह 20 सेकंड तक के समय को सटीकता से बताता है।

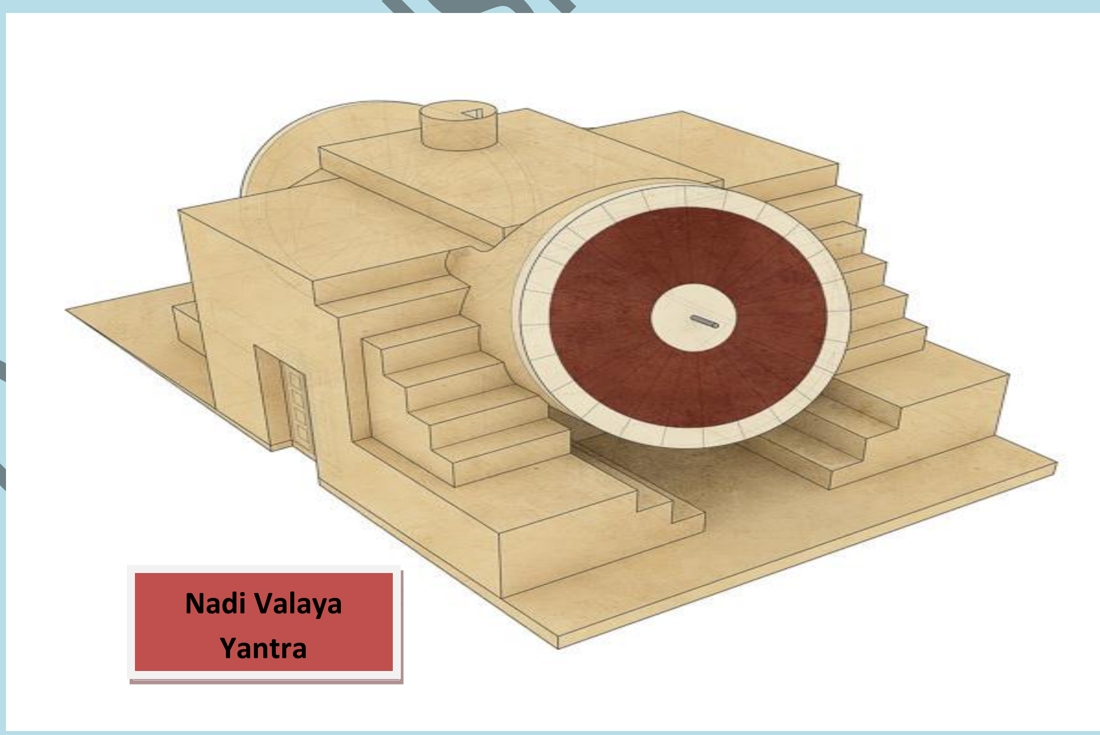

Nadi Valaya Yantra

3. नाड़ी वलय यंत्र- यह भी सूर्य घड़ी है जिसका कार्य जयपुर में सूर्य की स्थिति एवं समय को बताना है। यह एक यंत्रों का जोड़ा है जो कि उत्तर एवं दक्षिण में मुंह किए हुए हैं जो कि सूर्य के उत्तरायण और दक्षिणायन दिशा में उसकी स्थिति को बताता है।

4. राम यंत्र- इस यंत्र का प्रयोग ब्रह्मांड में स्थित किसी भी खगोलीय पिंड की स्थिति को देखने के लिए किया जाता है।

5. यंत्र राज- यह 3 मीटर ऊंचा एक एस्ट्रो लैब से जो कि सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण एवं सूर्य व चंद्र के उदय एवं अस्त होने की जानकारी भी प्राप्त करने में सहायता करता है।

6. कपाली यंत्र- इस यंत्र के द्वारा भी सभी ग्रह नक्षत्र एवं सूर्य के साल भर की उनकी स्थिति को जाना जा सकता है। यह कुंडली एवं अन्य खगोलीय गणना हेतु उपयुक्त था।

Shrimali

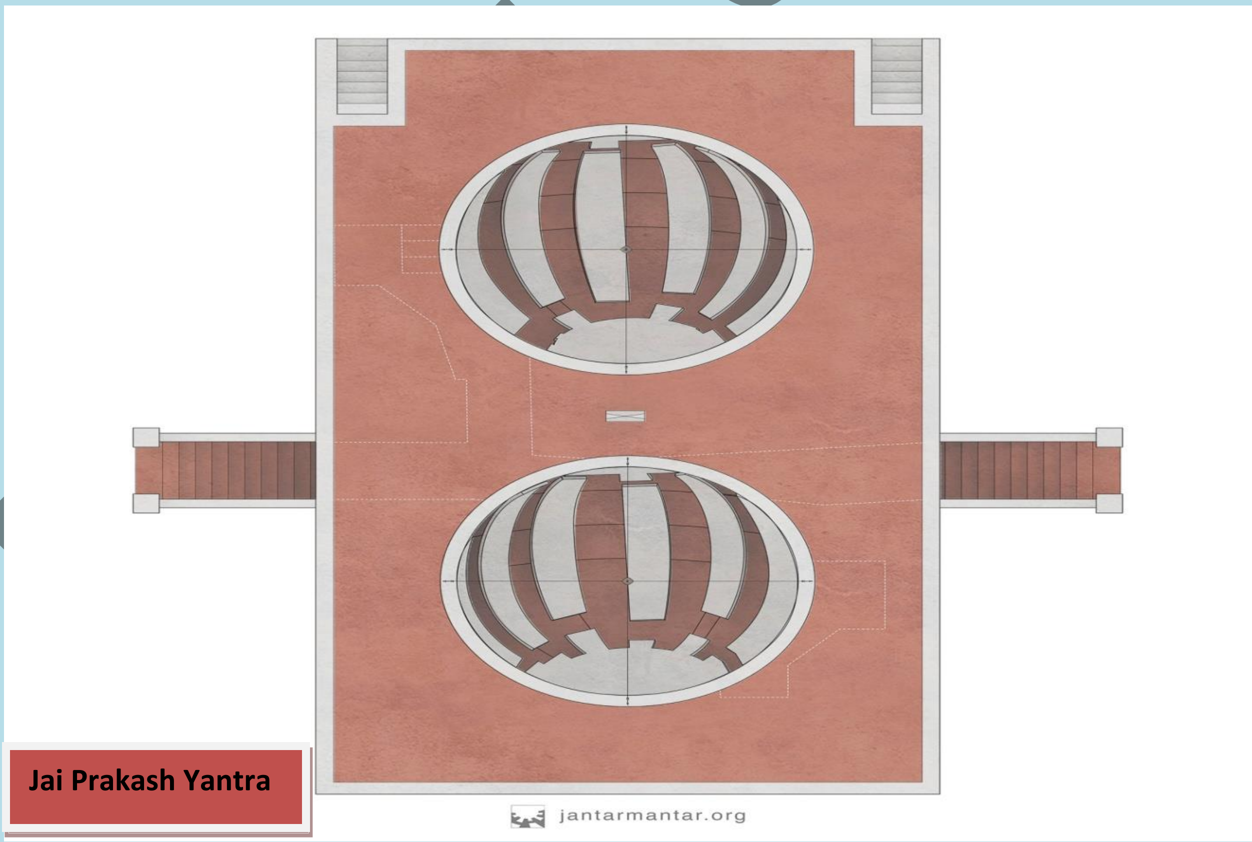

Jai Prakash Yantra

7. **जयप्रकाश यंत्र-** यह यंत्र दो कटोरे के भाती बना हुआ है जो कि पृथ्वी के दो भागों का प्रतिनिधित्व करता है। इस यंत्र का निर्माण स्वयं जयसिंह ने किया था यह एक जटिल एवं विस्तृत यंत्र है। यह सबसे बाद में बना था। इसके माध्यम से अन्य उपकरणों की गणना एवं पाठन को सत्यापित करके सुधारा गया था।

स्थापत्य कला-

गणित एवं ज्योतिष के बाद सवाई जय सिंह ने उल्लेखनीय कार्य किए। आमेर राज प्रसाद में कुछ निर्माण कार्य करवाया परंतु जब देखा कि आमेर के भविष्य में विस्तार की संभावना नहीं है तो उन्होंने 1725 ईसवी में जय निवास महल का निर्माण से आमेर के दक्षिण भाग में एक समतल मैदान में करवाया। इसी के आसपास 1723 ईसवी में जयनगर जो कि वर्तमान का जयपुर है बसाना प्रारंभ किया। जयपुर नगर के निर्माण से पूर्व जयसिंह ने देश-विदेश से अनेक नगरों के नक्शे मंगवाए तथा नए नगर को बनाने की योजना बनाई। जयपुर नगर निर्माण के मुख्य स्थापत्य का विद्याधर नामक एक बंगाली ब्राह्मण थे जो कि नगर निर्माण कला का विशेषज्ञ था। जयपुर नगर की नींव 18 नवंबर 1727 को रखी गई। साथी जोटवाड़ा नदी से नवनिर्मित नगर के लिए पानी लाने के लिए एक नाहर पर काम प्रारंभ कर दिया गया। 1729 नगर का एक भाग जिसमें बाजार, मंदिर, मकान आदि थे बनकर तैयार हो गए। सवाई जयपुर अथवा जयनगर सुनिश्चित योजना के तहत नक्शे के आधार पर निर्मित यह अपनी शैली का पहला नगर था। इसकी इमारतों, सड़कों एवं बस्तियों में एकरूपता थी। जयपुर फतेहपुर सीकरी की भर्ती नहीं था जो कि मुख्य रूप से सही आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनवाया गया था और जहां प्राकृतिक सुविधाओं का विशेष प्रभाव था, यहां नौ में से सात खंड जनसाधारण के मकानों व दुकानों के लिए निर्धारित किए गए थे।

नगर नौ आयताकार खंडों में बांटा गया था इनमें से उत्तर की ओर के दो खंड राज निवास, राजकीय कार्यालय एवं वेधशाला के लिए सुरक्षित रखे गए थे। पूर्व में सूरज पूरब पश्चिम में चांदपोल को जोड़ने वाला मुख्य मार्ग लगभग 2 मील लंबा 120 फुट चैड़ा था। उत्तर से दक्षिण की ओर जाने वाली तीन सड़कें इस मुख्य मार्ग को काटती थी और इस प्रकार नगर को आठ खंडों में बांटती थी। नवा खंड बाहर पूर्व की ओर था। फादर जॉर्ज टाइपेथेलर, जो फादर स्ट्रोब्ल के साथ 1739

Dr. Manish Shrimali

में जयपुर आया था यहां की सीधी व चैड़ी सड़कों की अन्य नगरों के टेढ़े मेढ़े व संतरे मार्गों से तुलना करते हुए लिखता है कि मुख्य मार्ग, जो सूरजपोल व चांदपोल के बीच में है, इतना चैड़ा है कि 6 या 7 गाड़ियां इस पर आसानी से बराबर चल सकती है। जहां उत्तर से दक्षिण की ओर जाने वाली सड़कें मुख्य मार्ग को काटती है वहां तीन विशाल चौपड़ है जिनके कारण नगर के व्यस्त क्षेत्र में भी बड़ा खुलापन मिलता है।

जयसिंह ने कुछ अन्य इमारतें भी बनवाई थी जैसे मानसागर के बीच जलमहल, सिरहा ड्योढ़ी बाजार में कल्कि जी का मंदिर, यज्ञ स्तंभ के निकट की छोटी पहाड़ी पर विष्णु मंदिर और जयपुर से लगभग 2 मील दूर सिसोदिया रानी का महल। जयसिंह ने जयगढ़ वन नाहरगढ़ भी बनवाए। नाहरगढ़ के विशाल भवन जयपुर शहर के सभी स्थानों से दिखाई पड़ता है। जयसिंह ने जयपुर राज्य के बाहर भी अनेक मंदिर व सराय बनवाए थे। इसके अलावा यात्रियों की सुविधा के लिए अपने खर्चे से प्रत्येक सुबह में सराय बाजार बनवाएं।

धार्मिक कार्य-

सवाई जयसिंह में धर्म एवं विज्ञान का अद्भुत समन्वय था। यह अन्य हिंदू शासकों के सम्मान की धर्म एवं संस्कृति के प्रति अपार श्रद्धा थी। इसने मुगल बादशाह से जजिया कर को हटवाकर अपनी धर्म के प्रति आस्था को व्यक्त किया। जय सिंह वैदिक कालीन यज्ञ संस्कृति के प्रति भी आस्था रखता था यही वजह थी कि उसने कई बड़े-बड़े जो का आयोजन करवाया था जिनमें वाजपेय, राजसूय, पुरुष मेध जैसे प्रमुख यज्ञ थे। सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह अंतिम हिंदू राजा था जिसने अश्वमेध जैसे प्राचीन और भव्य यज्ञ का आयोजन किया था। केवल एक बार नहीं अपितु जयसिंह ने दो बार अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया। इस यज्ञ के प्रधान पुरोहित पुंडरीक रत्नाकर थे। इस यज्ञ में हवन सामग्री में एक लाख एवं दान दक्षिणा में दो लाख के लगभग रुपए खर्च हुए थे।

समाज सुधारक-

सवाई जयसिंह स्वयं विद्वान एवं विद्वानों तथा कलाकारों को अवसर देने वाले तो थे ही साथ ही उन्होंने समाज में प्रचलित को प्रथाओं को दूर कर स्वयं को एक समाज सुधारक के रूप में भी स्थापित किया। अपने समाज सुधार कार्यक्रम में सबसे प्रमुख उन्होंने ब्राह्मणों में प्रचलित भेदभाव

Dr. Manish Shrimali

को कम किया। उन्होंने यज्ञ के अवसर पर सभी ब्राह्मणों को एक साथ भोजन करने के लिए राजी कर लिया जिससे कम से कम ब्राह्मणों में भेदभाव की कमी हुई। ऐसे ब्राह्मण जो साथ बैठकर भोजन करने को तैयार हो गए उनको छः न्यात कहा जाने लगा। मथुरा के आसपास के कुछ साधुओं को गृहस्थ के रूप में बसाकर में प्रचलित व्यभिचार के दोष का निवारण किया। इस समय वैवाहिक खर्च बहुत अधिक होता था विशेषकर राजपूतों में सवाई जयसिंह ने विवाह के समय होने वाले अब विवाह पर रोक लगाई। इसके अतिरिक्त उन्होंने जन कल्याण के कई कार्य किए जिनमें कुए, धर्मशाला, अनाथालय तथा सदाव्रत आदि मुख्य थे।

Dr. Manish Shrimali